

पानियम - संख्या अठारह

२५० का तीन गुणा

Jeff Pippenger

2026-02-25

अब हम दानिय्येल की पुस्तक के ग्यारहवें अध्याय के बारहवें पद के कुछ निहितार्थों पर विचार करेंगे, और तत्पश्चात् पद 11 से 15 के इतिहास में "250" वर्षों की तीन कालरेखाओं को स्थापित करेंगे, जिसकी पूर्ति 200 ईसा-पूर्व में पानियम के युद्ध में हुई थी। 457 ईसा-पूर्व में आरंभ हुई "250" वर्षों की कालरेखा 207 ईसा-पूर्व में उस कालखंड के मध्य में समाप्त होती है, जो राफ़िया के युद्ध से आरंभ होकर पानियम के युद्ध पर समाप्त होता है। नीरो की "250" वर्षों की कालरेखा कॉन्स्टैन्टाइन के त्रि-चरणीय इतिहास पर समाप्त होती है, जिसका निरूपण वर्ष 313, 321 और 330 द्वारा होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के "250" वर्ष 4 जुलाई, 2026 को समाप्त होते हैं।

नेरो की रेखा 'पशु की प्रतिमा' के परीक्षण-काल के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती है—पहले संयुक्त राज्य अमेरिका में, और फिर विश्व में। 457 ईसा पूर्व की रेखा ट्रम्प को दो युद्धों के बीच, सैन्य दृष्टि से, एक मध्य-बिंदु पर स्थापित करती है। 1776 से विस्तृत होता हुआ कालखंड भी ट्रम्प के अंतिम राष्ट्रपति-काल के लिए एक मध्य-बिंदु को चिह्नित करता है। इन रेखाओं को उनके उचित स्थान पर रखने के लिए हम पहले पद 12 तथा रूस और पुतिन के पतन पर विचार करेंगे। फिर "250" वर्षों की तीन रेखाएँ, तत्पश्चात् हस्मोनी राजवंश की रेखा। उन रेखाओं के स्थापित हो जाने पर, हम पतरस को पानियम के साथ संरेखित करेंगे। जब वे रेखाएँ अपने स्थान पर होंगी, तब हमें यह पहचानने में सक्षम होना चाहिए कि 18 जुलाई, 2020 के संदेश को कैसे संशोधित और उद्धोषित किया जाना है, और यह कि वह योएल की पुस्तक का संदेश है।

यहूदा का राजा उज्जिय्याह और मिस्र का राजा टॉलेमी

राफिया के युद्ध में ग्यारहवें पद की पूर्ति करने वाला इतिहास, राजा उज्जिय्याह के इतिहास के साथ संगति रखता है। जब यशायाह को पश्चात् वर्षा का संदेश घोषित करने के लिए शुद्ध किया गया और सशक्त किया गया, तब उसका आह्वान उसी वर्ष हुआ जिस वर्ष उज्जिय्याह की मृत्यु हुई।

जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को भी उच्च और उन्नत सिंहासन पर विराजमान देखा, और उसके वस्त्र का घेर मन्दिर को भर रहा था। यशायाह 6:1.

उज्जिय्याह की मृत्यु से पहले, उसके द्वारा प्रकट किया गया विद्रोह राफिया के युद्ध में विजय के तुरन्त बाद टॉलेमी के विद्रोह के समांतर और अनुरूप था। उज्जिय्याह और टॉलेमी उस दक्षिण के राजा के प्रतीक हैं, जिसका हृदय घमण्ड से उन्नत हो गया है, जो अपनी राज्यसत्ता को कलीसियाई सत्ता के साथ मिलाने का प्रयत्न करके विद्रोह करता है। जब उज्जिय्याह ने कलीसिया और राज्य को मिलाने का प्रयत्न किया, तब उसके ललाट पर हुआ कुछ पशु के चिह्न का प्रतिरूप था।

और तीसरा स्वर्गदूत उनके पीछे-पीछे आया, ऊँचे शब्द से कहता हुआ, यदि कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे, और अपने माथे पर या अपने हाथ में उसका चिह्न ले, तो वही परमेश्वर के क्रोध के दाखमधु को पीएगा, जो उसके कोप के कटोरे में बिना मिलावट उंडेला गया है; और वह पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने के सामने आग और गन्धक से यातना पाएगा; और उनकी यातना का धुआँ युगानुयुग ऊपर उठता रहेगा; और जो पशु और उसकी मूरत की पूजा करते हैं, और जो कोई उसके नाम का चिह्न लेता है, उन्हें दिन में न रात में विश्राम होगा। प्रकाशितवाक्य 14:9-11.

तब उज्जिय्याह कलीसिया और राज्य को मिलाने के अपने विद्रोही प्रयत्न के समय से क्रमिक मृत्यु का प्रतिनिधित्व करता है। इसके बाद वह अपने पुत्र के साथ ग्यारह वर्षों तक निष्प्रभावी सह-राजत्व का प्रतिनिधित्व करता है। अपने विद्रोह के बाद उज्जिय्याह ग्यारह वर्ष तक जीवित रहा। उसके विद्रोह का आरंभ रविवार के कानून का प्रतीक है, जहाँ कलीसिया और राज्य को मिलाया जाता है और पशु की छाप प्रवर्तित की जाती है। ग्यारह वर्ष बाद वह मर गया, जो यहूदा के दक्षिणी राज्य के राजा के रूप में उसके राज्यकाल के अंत का प्रतिनिधित्व करता है, जो महिमामय देश था, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका है।

टॉलेमी के साथ भविष्यसूचक संबंध में, उज्जिय्याह यहूदा, महिमामय देश और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद का प्रतिनिधित्व करता है; जबकि टॉलेमी मिस्र का प्रतिनिधित्व करता है, जो अजगर-शक्ति है, जिसका धर्म आध्यात्मवाद है। जब इन दोनों राजाओं को समांतर रेखाओं के रूप में देखा जाता है, तो उज्जिय्याह महिमामय देश का द्योतक नहीं रह जाता, और वे दोनों मिलकर दो राष्ट्रों का एक प्रतीक बन जाते हैं। मिस्र और यहूदा क्रमशः आध्यात्मवाद और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के धर्मों के प्रतीक हैं। वे राज्य और कलीसिया के प्रतीक हैं। जब वे एक ही प्रतीक के रूप में संरेखित होते हैं, तब वे जिस राजसत्ता और कलीसियाई सत्ता का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह दो राष्ट्रों को समेटे होती है—जैसे मादी और फारसी थे, जैसे फ्रांस में मिस्र और सदोम थे, जैसे संयुक्त राज्य के गणराज्यवाद और प्रोटेस्टेंटवाद के सींग हैं, जैसे इस्राएल और यहूदा के उत्तरी और दक्षिणी राज्य थे, तथा जैसे मूर्तिपूजक रोम और पोपतंत्री रोम थे। दो राज्यों के प्रतीक के रूप में, वे यरूशलेम के मन्दिर द्वारा भविष्यसूचक रूप से परस्पर सम्बद्ध हैं, जहाँ दोनों, उज्जिय्याह और टॉलेमी, ने यरूशलेम के मन्दिर में बलिदान चढ़ाने का प्रयत्न किया था। दो राष्ट्र, जो दोनों एक ही पवित्रस्थान के विरुद्ध विद्रोह करते हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि दोनों राजाओं का विद्रोह यरूशलेम के मंदिर के संबंध में था, जो उस मंदिर का प्रतीक है जहाँ दानिय्येल ने दसवें अध्याय में मसीह को देखा। इन दोनों राजाओं के इतिहास यूक्रेन युद्ध पर आकर एक-दूसरे से मेल खाते हैं, और इस प्रकार वे सन 2014 में अपनी गवाही आरंभ करते हैं। वे दोनों सैन्य विजयों द्वारा उन्नत हुए, जिसका प्रतिनिधित्व ग्यारहवें पद में राफ़िया के युद्ध द्वारा किया गया है। राफ़िया बाइबिलीय भविष्यवाणी के छठे राज्य तथा रविवार-विधान के त्रिगुणी संघ की सीमा-भूमि का चिह्न है। यह संघर्षशील कलीसिया से विजयी कलीसिया में संक्रमण की भी सीमा-रेखा है।

2014 के बाद, धनाढ्यतम राजा ने 2015 में राष्ट्रपति-पद हेतु चुनाव लड़ने की अपनी मंशा की घोषणा की। 2020 में, रिपब्लिकन श्रृंग का प्रतिनिधि वही धनाढ्यतम राजा उस घातक घाव से आहत हुआ, जो आगे चलकर चंगा किया जाना था। 2022 में यूक्रेन का युद्ध उग्र हो उठा। तत्पश्चात् 2024 के चुनाव में, पद तेरह की पूर्ति में, ट्रम्प लौटा। जुलाई 2023 में बियाबान में एक स्वर गूँजा। 31 दिसम्बर 2023 को प्रोटेस्टेंट श्रृंग का पुनरुत्थान हुआ; और 2024 के चुनाव में, जब ट्रम्प लौटा, रिपब्लिकन श्रृंग का भी पुनरुत्थान हुआ; और 2025 में मन्दिर-परीक्षा के आगमन के साथ नीव-परीक्षा का समापन हुआ।

१९८९

1989 में जिन सत्तों पर से मुहर हटाई गई, वे द्विविध थे। सुधार-आन्दोलनों की भविष्यवाणी-समांतरताएँ और दानिय्येल ग्यारह की अंतिम छह आयतें—इन दोनों पर से मुहर एक ही समय पर हटाई गई। कुछ विशिष्ट भविष्यवाणी-नियम आयत चालीस के प्रारम्भिक संदेश की स्थापना के लिए प्रयुक्त किए गए। उन्हीं सत्तों में से कुछ अब उसी आयत के गुप्त इतिहास की कुंजी हैं, जहाँ वे भविष्यवाणी-रत्न खोजे गए थे। मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करूँगा।

1989 में, एडवेंटवाद के भीतर दानिय्येल के अंतिम छह पद क्या निरूपित करते हैं, इस विषय में कोई एकीकृत समझ नहीं थी। वह एकता का अभाव दो प्रकार का था। पदों के अर्थ पर कोई सर्वसम्मति नहीं थी। जिन्होंने इन पदों की समझ होने का दावा किया, उन्होंने ऐसे मानवीय विचार प्रस्तुत किए जो पतित प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद के धर्मशास्त्र के साथ मिश्रित थे—वह जन्मसिद्ध अधिकार की विरासत जो उन्हें 1863 के विद्रोह के अपने पूर्वजों से

मिली थी, जब उन पूर्वजों ने यारोबाम के आधारभूत विद्रोह में आज्ञाभंगकारी भविष्यद्वक्ता की भूमिका निभाई थी। पदों के विषय में वे व्यक्तिगत धारणाएँ, अधिक से अधिक, निजी व्याख्याएँ ही थीं। उन पदों के संबंध में उनकी धारणाएँ या तो भविष्यद्वक्ता के मूलभूत अनुप्रयोग से विरोधाभासी थीं, और प्रायः उन्हीं मूल प्रस्तावनाओं के भी विरुद्ध थीं, जिन्हें उन्होंने स्वयं ही उन पदों के विषय में प्रतिपादित किया था।

हमने उन पदों में जो देखा, वह सभी छह पदों के विषय में एक सुसंगत समझ थी। संदेश की उसी सुसंगतता ने मुझे अपनी समझ प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया, यद्यपि मुझे ज्ञात था कि सम्पूर्ण एडवेंटवाद मेरी समझ को अस्वीकार करता था। उन पदों के विषय में हमारी जो समझ थी, वह प्रथम बार 1996 में प्रकाशित हुई, और वहाँ प्रतिपादित वह समझ समय के बीतते जाने के साथ इन तीस वर्षों में केवल और अधिक सुदृढ़ हुई है!

यदि आप पत्रिका "The Time of the End" में दिए गए बिल्कुल प्रथम संदर्भ पर विचार करें, तो आपको Testimonies, खंड 9, पृष्ठ 11 मिलता है। 9/11 से पाँच वर्ष पूर्व ही, पत्रिका 9/11 से आरम्भ होती है। जिन अंतर्दृष्टियों ने मुझे प्रोत्साहित किया, उनमें से एक यह समझ थी कि पद चालीस में 'समय के अंत' पर उत्तर और दक्षिण के राजा शाब्दिक नहीं, वरन् आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं। उस समय मुझे पहले से विदित था कि बहन वाइट ने कहा है कि दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक ही पुस्तक हैं, और दानिय्येल में जो भविष्यवाणी की रेखा है, उसे ही यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य में आगे उठाया है। मैंने यह पाया था कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 11, जिसकी पूर्ति 1798 में 'समय के अंत' के आसपास की ऐतिहासिक घटनाओं में हुई; उस अध्याय पर बहन वाइट की टीका स्पष्ट रूप से सिखाती है कि फ्रांस आध्यात्मिक मिस्र था, और उतनी ही स्पष्टता से वह प्रकाशितवाक्य अध्याय 17 में यह बताती हैं कि पशु पर बैठी व्यभिचारिणी आध्यात्मिक बाबुल थी।

उन दो शक्तियों की जो पहचान बहन वाइट ने प्रस्तुत की है, वह 'महान संघर्ष' में मिलती है, और उनकी वे टिप्पणियाँ यूहन्ना और दानिय्येल की गवाही को परस्पर जोड़ती हैं। दानिय्येल अध्याय ग्यारह में 'दक्षिण के राजा' की परिभाषा वह शक्ति है जो मिस्र पर नियंत्रण रखती है, और 'उत्तर का राजा' वह शक्ति है जो बाबुल पर नियंत्रण रखती है। यह तथ्य कि बाइबल और 'भविष्यद्वक्ता की आत्मा' ने उस बिंदु को सिद्ध करने के लिए दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य को साथ रखकर सत्य की स्थापना हेतु सामंजस्यपूर्वक कार्य किया, ऐसा कुछ है जिसे मैं किसी भी भ्रमित धर्मशास्त्री, या किसी स्व-समर्थित सेवाकार्य के स्वयंभू, भ्रमित नेता के आगे कभी नहीं त्याग सकता था।

टॉलेमी और उज्जिय्याह को राफ़िया के युद्ध तथा उनके हृदय ऊँचे उठ जाने के पश्चात घटित होने वाले परिणाम के प्रतीकों के रूप में समझना, इस तथ्य द्वारा निर्देशित होना है कि टॉलेमी उस अजगर-शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जो रोम की प्रतिनिधि शक्ति को परास्त करती है, परन्तु अन्ततः उस प्रतिनिधि शक्ति से हार जाती है, जिसने पद 10 में और सन् 1989 में टॉलेमी को पराजित किया था। ये ऐतिहासिक भेद उद्देश्यपूर्ण और महत्त्वपूर्ण हैं।

जब वह कलीसिया और राज्यसत्ता को एक साथ मिलाने का प्रयास करता है, तब उज्जिय्याह 'पशु का चिह्न' ग्रहण करता है; उज्जिय्याह 'महिमामय देश' है, और 'महिमामय देश' 1989 में संदेश के आरंभ में एक प्रमुख तर्क था। क्या 'महिमामय देश' संयुक्त राज्य अमेरिका है, या वह सप्तम-दिवसीय एडवेंटिस्ट कलीसिया है? जो तब इस भ्रांत धारणा पर टिके थे कि 'महिमामय देश' एडवेंटिस्ट कलीसिया है—और जो अब भी ऐसा मानते हैं—वे यह तर्क देते कि पद पैतालीस का 'महिमामय पवित्र पर्वत' स्पष्टतः परमेश्वर की कलीसिया था; अतः उनके लिए पर्वत और देश एक ही प्रतीक थे। मेरा विचार है, यह तो सामान्य मानवीय तर्क ही है।

उज्जिय्याह महिमामय देश है, और टोलेमी मिस्र है। महिमामय देश के रूप में उज्जिय्याह के पास प्रोटेस्टेंटवाद और गणतंत्रवाद के दो सींग हैं। टोलेमी का राजनीतिक प्रकटीकरण साम्यवाद और उसके विविध रूपों में होता है, और टोलेमी का धार्मिक प्रकटीकरण आत्मवाद और उसके विविध रूपों में होता है। अजगर-शक्ति का एक लक्षण यह है कि वह एक महासंघ है, परन्तु वह झूठा भविष्यद्वक्ता, जो महिमामय देश है, दो सींगों वाला एकमात्र राष्ट्र है।

दानिय्येल 11:40 ने यह स्थापित किया कि 1989 में जब सोवियत संघ बहा दिया गया, तब संयुक्त राज्य अमेरिका पापाई सत्ता की प्रतिनिधि शक्ति था। यह सत्य प्रकाशितवाक्य 13 का दो-सींगों वाला पृथ्वी का पशु की भूमिका के अनुरूप है, क्योंकि ये दोनों पुस्तकें एक ही हैं।

और मैंने देखा कि पृथ्वी में से एक और पशु ऊपर आ रहा था; उसके दो सींग थे, मेम्ने के समान, और वह अजगर की तरह बोलता था। और वह पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने चलाता है, और पृथ्वी तथा उसमें रहने वालों को पहले पशु की उपासना कराता है, जिसका घातक घाव चंगा हो गया था। प्रकाशितवाक्य 13:11, 12.

प्रकाशितवाक्य तेरह संयुक्त राज्य को पोपतंत्र की प्रतिनिधि शक्ति के रूप में चिन्हित करता है, क्योंकि पृथ्वी से निकला पशु उस समुद्र से निकले पशु की 'समस्त शक्ति का प्रयोग करता है' जो 'उसके पहले' आया था। दूसरी आयत में मूर्तिपूजक रोम के अजगर ने पोपतंत्र को उसकी शक्ति, सिंहासन और महान अधिकार दे दिए थे। 'शक्ति' के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ शक्ति ही है, परन्तु बारहवीं आयत में 'शक्ति' के रूप में जो शब्द अनूदित है, वह भिन्न है, जिसका अर्थ 'प्रत्यायोजित अधिकार' है।

संयुक्त राज्य अमेरिका पापत्व की प्रतिनिधि शक्ति है। पापत्व का प्रतिरूप मूर्तिपूजक रोम द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसने, जैसा कि पद दो में प्रतिपादित है, पापत्व को अपनी सैन्य और आर्थिक सहायता प्रदान की। इसी प्रकार मूर्तिपूजक रोम ने संयुक्त राज्य अमेरिका का भी प्रतिरूप दर्शाया, जो पापत्व की सत्ता के कुत्सित कार्यों को संपन्न कराने के लिए अपने 'रथ, पोत और अश्वारोही' भी प्रदान करेगा।

जब पद दस, ग्यारह और पंद्रह के तीनों युद्धों की पूर्ति इतिहास में हुई, तब प्रत्येक युद्ध में एंटीओकस मैग्नस सम्मिलित था। यह तथ्य स्थापित करता है कि तीनों युद्धों में निरूपित शक्ति पशु की प्रतिनिधि शक्ति है, क्योंकि वह सदा एंटीओकस ही है, और 1989 में एंटीओकस संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रतिनिधि शक्ति था।

पद सोलह के रविवार के कानून तक ले जाने वाले तीन युद्धों पर अल्फा और ओमेगा की छाप तथा सत्य की संरचना, दोनों ही परिलक्षित हैं। पहले और तीसरे युद्ध में मुख्य शक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका है, जो प्रथम और अंतिम युद्ध में अल्फा और ओमेगा की पहचान कराता है। पद सोलह के रविवार के कानून तक ले जाने वाले ये तीन युद्ध सत्य की छाप भी धारण किए हुए हैं। मध्य का युद्ध, जो नाजी यूकेन की प्रतिनिधि शक्ति है, इब्रानी शब्द "सत्य" की रूपरेखा में मध्य मार्ग-चिह्न के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है। ये तीन युद्ध 1989 से लेकर रविवार के कानून तक का प्रतिनिधित्व करते हैं, अर्थात् वे पद चालीस के "गुप्त इतिहास" का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रकाशितवाक्य ग्यारह का ग्यारहवाँ पद 2023 को उस बिंदु के रूप में निरूपित करता है, जहाँ दोनों सींगों का पुनरुत्थान होता है। दानिय्येल ग्यारह का ग्यारहवाँ पद इतिहास के ठीक उसी काल की पहचान करता है। भविष्यवाणी की आन्तरिक रेखा और बाह्य रेखा 2023 में संरेखित होती हैं। आन्तरिक रेखा वह "वस्तु" है जिसे दानिय्येल ने समझा, और बाह्य रेखा वह "दर्शन" है जिसे उसने समझा।

दानिय्येल द्वारा निरूपित मंदिर-परीक्षा का आरम्भ बाईसवें दिन से हुआ, और 9/11 के बाईस वर्ष बाद—जो वह बिंदु है जब यशायाह मंदिर में प्रवेश करता है—आपको 2023 तक ले आता है। यशायाह 9/11 को उस समय के रूप में चिन्हित करता है जब उज्जिय्याह, ग्यारह वर्ष तक कोढ़ के साथ जीने के पश्चात, मर जाता है। मंदिर के निर्माण का कार्य पहले नींव रखने, तत्पश्चात मंदिर खड़ा करने और शीर्ष-शिला रखने से बनता है, जो आगे तीसरी कसौटी तक ले जाता है, जिसका प्रतिनिधित्व लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस की रेखा में तुरहियों के पर्व द्वारा होता है। अनन्त सुसमाचार का आंतरिक कार्य बाह्य रेखा के इतिहास के दौरान संपन्न होता है। पद ग्यारह में पुतिन का प्रकार प्टोलेमी द्वारा निरूपित किया गया है, और राजा उज्जिय्याह उस चित्रण का दूसरा साक्षी प्रदान करता है जिसमें दक्षिण का राजा सैन्य सफलता के द्वारा उन्नत होता है, और तत्पश्चात धर्म-क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास करता है।

और दक्षिण का राजा क्रोध से उबल उठेगा, और निकलकर उससे, अर्थात् उत्तर के राजा से, युद्ध करेगा; और वह एक बहुत बड़ी सेना खड़ी करेगा, परन्तु वह सेना उसके हाथ में कर दी जाएगी। और जब वह उस सेना को हरा

लेगा, तब उसका मन ऊँचा हो जाएगा; और वह बहुतों, दस-दस हज़ारों को मार गिराएगा; तौभी वह इससे बलवान न होगा। दानिय्येल 11:11, 12.

उरियाह स्मिथ प्टोलेमी फिलोपेटर के इतिहास और यरूशलेम के मंदिर में बलिदान अर्पित करने के उसके प्रयास की चर्चा करते हैं।

अपनी विजय का यथोचित उपयोग करने का विवेक प्टोलेमी में नहीं था। यदि वह अपनी सफलता का अनुगमन करता, तो संभवतः वह अन्तियोकस के समस्त राज्य का अधिपति बन जाता; परन्तु केवल कुछ धौंसों और कुछ धमकियाँ देकर ही संतुष्ट होकर उसने शान्ति कर ली, ताकि वह अपनी पशुवत वासनाओं के अनवरत और निरंकुश भोग-विलास में अपने को समर्पित कर सके। इस प्रकार शत्रुओं को जीत लेने के बाद, वह अपने ही दुर्गुणों से परास्त हो गया, और जिस महान् कीर्ति की वह स्थापना कर सकता था, उसे भूलकर उसने अपना समय भोज-विलास और लंपटता में व्यतीत किया।

उसकी सफलता से उसका हृदय घमण्ड से ऊँचा हो उठा, परन्तु उससे वह तनिक भी सुदृढ़ न हुआ; क्योंकि उस सफलता का जो अपकीर्तिकर उपयोग उसने किया, उसी ने उसकी अपनी प्रजा को उसके विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसा दिया। परन्तु उसके हृदय का यह घमण्ड विशेष रूप से यहूदियों के साथ उसके व्यवहार में प्रकट हुआ। येरूशलेम में आकर उसने वहाँ बलिदान चढ़ाए, और उस स्थान की विधि और धर्म के प्रतिकूल, मन्दिर के अतिपवित्र स्थान में प्रवेश करने की उसे अत्यन्त अभिलाषा थी; परन्तु, यद्यपि बड़ी कठिनता से, उसे रोका गया, और वह वहाँ से समस्त यहूदी जाति के विरुद्ध प्रज्वलित क्रोध से धधकता हुआ निकल गया, और तत्क्षण उनके विरुद्ध एक भयंकर और निष्ठुर उत्पीड़न का आरम्भ कर दिया। अलेक्ज़ान्द्रिया में, जहाँ यहूदी अलेक्ज़ेन्डर के दिनों से निवास करते आए थे, और सर्वाधिक अनुगृहित नागरिकों के विशेषाधिकार भोगते थे, इस उत्पीड़न में—युसेबियुस के अनुसार चालीस हज़ार, और जेरोम के अनुसार साठ हज़ार—जन मारे गए। मिस्रियों का विद्रोह, और यहूदियों का संहार, निश्चय ही उसके राज्य में उसे सुदृढ़ करने के लिए उपयुक्त न थे; अपितु उसके प्रायः सर्वथा विनाश के लिए पर्याप्त सिद्ध हुए। उरियाह स्मिथ, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य, 254.

ईसा पूर्व 217 में राफ़िया में प्टोलेमी फिलोपेटर की सैन्य विजय ने प्टोलेमी को सुदृढ़ नहीं किया, परन्तु उससे "उसका हृदय उन्नत हो गया"। यूक्रेन युद्ध में विजय पुतिन को सुदृढ़ नहीं करेगी, परन्तु वह "उसका हृदय उन्नत कर देगी", जैसे कि सैन्य सफलता के कारण राजा उज्जिय्याह का हृदय उन्नत हो गया था।

और उज्जिय्याह ने समस्त सेना के लिये ढालें, भाले, सिरस्त्राण, जिरहबख्तर, धनुष, और पत्थर फेंकने की गुल्लें तैयार कराए। और उसने यरूशलेम में ऐसे यंत्र बनवाए, जो चतुर पुरुषों द्वारा आविष्कृत थे, ताकि वे मीनारों और प्राचीरों पर रखे जाएँ, और उनसे बाण चलाए जाएँ तथा बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाएँ। और उसका नाम दूर-दूर तक फैल गया; क्योंकि उसे अद्भुत रीति से सहायता मिली, यहाँ तक कि वह बलवन्त हो गया। परन्तु जब वह बलवन्त हो गया, तब उसका मन ऊँचा हो उठा, जिससे उसका नाश हुआ; क्योंकि उसने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध अपराध किया, और धूप की वेदी पर धूप जलाने के लिये यहोवा के मन्दिर में गया। 2 इतिहास 26:14-16.

दक्षिण के दो राजा, जिनके हृदय सैन्य विजयों के कारण ऊँचे हो गए थे, उसी मन्दिर में प्रवेश करने और भेंट चढ़ाने का प्रयत्न किया, जो कार्य केवल याजक को करने का अधिकार था। दोनों ही मामलों में याजकों ने उन घमण्डी राजाओं के इस प्रयत्न का विरोध किया। तब एक राजा ने यहूदियों के विरुद्ध प्रतिशोधात्मक कार्यवाही आरम्भ की, और दूसरे के ललाट पर कोढ़ निकल आया।

तब याजक अजर्याह उसके पीछे भीतर गया, और उसके साथ यहोवा के अस्सी याजक, जो पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने राजा उज्जिय्याह का सामना किया और उससे कहा, "हे उज्जिय्याह, तेरे लिये यह उचित नहीं कि तू यहोवा के लिये धूप जलाए; परन्तु यह काम तो हारून के पुत्र उन याजकों का है, जो धूप जलाने के लिये पवित्र ठहराए गए हैं। पवित्रस्थान से बाहर निकल जा; क्योंकि तूने अपराध किया है; और यह बात यहोवा परमेश्वर की ओर से तेरे लिये आदर का कारण न होगी।" तब उज्जिय्याह क्रोधित हुआ, और धूप जलाने के लिये उसके हाथ

में धूपदान था; और जब वह याजकों पर क्रोध कर रहा था, तब यहोवा के भवन में, धूप-वेदी के पास, याजकों के सामने ही, उसके ललाट पर कुष्ठ फूट निकला। तब महायाजक अजर्याह और सब याजकों ने उसकी ओर देखा, और देखो, उसके ललाट पर कुष्ठ था; सो उन्होंने उसे वहाँ से बाहर निकाल दिया; हाँ, वह स्वयं भी शीघ्र बाहर निकल गया, क्योंकि यहोवा ने उसे दण्ड दिया था। और राजा उज्जिय्याह अपनी मृत्यु के दिन तक कुष्ठी रहा, और, क्योंकि वह कुष्ठी था, एक अलग घर में रहता था; क्योंकि वह यहोवा के भवन से अलग कर दिया गया था। और उसका पुत्र योताम राजा के भवन पर प्रभारी था, और देश के लोगों का न्याय करता था। अब उज्जिय्याह के और काम, पहिले से अन्त तक, आमोज के पुत्र भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखे हैं। 2 इतिहास 26:17-22.

2014 में यूरोप के वैश्वीकरणवादियों और ओबामा शासन ने यूक्रेन राष्ट्र पर एक रंग-क्रांति आरंभ की। 2022 में रूस ने एक आक्रमण आरंभ किया जो अंततः पुतिन और रूस की विजय पर परिणत होगा; जिनका प्रतिनिधित्व दक्षिण के राजा टॉलेमी और उज्जिय्याह करते हैं। पद बारह कहता है कि पुतिन की विजय के बाद, "उसका हृदय ऊँचा हो जाएगा; और वह दसियों हज़ारों को गिरा देगा; परन्तु वह इससे बलवान न होगा।" तत्पश्चात् इतिहास उसके राज्य के क्रमिक पतन का वृत्तांत देता है।

यह क्रमिक अवनति अंततः उसकी मृत्यु पर समाप्त हुई; और जब तक एंटीओकस महान राफ्रिया में अपनी पराजय का प्रतिशोध लेता है, तब तक उसका सामना टोलेमी फ़िलोपेटर से नहीं रह गया था; उस समय एंटीओकस एक नाबालिग बालक का सामना कर रहा था जो तब मिस्र का शासक था। बालक अंतिम पीढ़ी का प्रतीक है; अतः एक स्तर पर पानियम में एंटीओकस द्वारा पराजित वह बाल-राजा दक्षिण के राज्य की अंतिम पीढ़ी है। व्यावहारिक स्तर पर वह बाल-राजा एंटीओकस की शक्ति की तुलना में दुर्बलता का प्रतिनिधित्व करता है।

टॉलेमी फिलोपेटर और एंटीओकस के बीच संपन्न शांतिसंधि चौदह वर्ष तक बनी रही। इसी बीच टॉलेमी असंयम और लंपटता के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ, और उसके स्थान पर उसका पुत्र, टॉलेमी एपिफानेस, जो तब चार या पाँच वर्ष का बालक था, उत्तराधिकारी बना। उसी समय एंटीओकस ने अपने राज्य के विद्रोह को दबा दिया था, और पूर्वी भागों को अपने अधीन कर के उन्हें आज्ञाकारिता में स्थिर कर दिया था; अतः जब बालक एपिफानेस मिस्र के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, तब वह किसी भी उपक्रम के लिए स्वतंत्र था; और इसे अपने राज्य का विस्तार करने के लिए इतना अनुकूल अवसर समझते हुए कि इसे हाथ से जाने न दिया जाए, उसने एक अपार सेना खड़ी की, "पूर्ववर्ती से भी बड़ी" (क्योंकि अपने पूर्वी अभियान में उसने बहुत-सा सेनाबल एकत्र किया था और महान धन-सम्पत्ति अर्जित की थी), और वह मिस्र के विरुद्ध प्रस्थान कर गया, यह अपेक्षा करते हुए कि बालक-राजा पर सहज विजय पा लेगा। वह किस प्रकार सफल हुआ, यह हम अभी देखेंगे; क्योंकि यहाँ इन राज्यों के मामलों में नई जटिलताएँ प्रवेश करती हैं, और इतिहास के रंगमंच पर नए पात्र प्रस्तुत होते हैं। यूरियाह स्मिथ, डैनियल एंड द रिवेलेशन, 255.

दक्षिण का राजा

रूस के अंतिम चरणों की रूपरेखा बनाना, भविष्यवाणी में वर्णित दक्षिण के राजा के अंतिम चरणों की रूपरेखा बनाना ही है। 1798 में अंत के समय पर भविष्यवाणी के इतिहास में प्रकट हुए आध्यात्मिक दक्षिण के राजा का एक भविष्यसूचक लक्षण यह है कि वह किस प्रकार अपने अंत को प्राप्त करता है। यह उत्तर के राजा और झूठे नबी का भी एक भविष्यसूचक लक्षण है। वे तीनों शक्तियाँ जो जगत को हरमगिदोन तक ले जाती हैं, उनके अंत परमेश्वर के वचन में विशिष्ट रूप से निर्दिष्ट हैं। पुतिन और रूस के साथ जो कुछ भी घटेगा, उसका प्रतिरूप दक्षिण के राजा के पूर्ववर्ती चरणों में पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका होगा।

दक्षिण के आध्यात्मिक राजा के पतन के उदाहरणों का पूर्वरूप, उसके प्रथम आध्यात्मिक राजा—जो क्रांति-काल में नास्तिक फ्रांस था—के पतन में प्रकट हुआ। दक्षिण के राज्य का पतन, दक्षिण के राजा के पतन को भी समाहित करता है। नेपोलियन का पतन फ्रांस के पतन के अनुरूप है, और अगले दक्षिणी राज्य—जो रूस था—के पतन के साथ भी सुसंगत ठहरता है। आधुनिक 'दक्षिण का राजा' के रूप में रूस की शुरुआत क्रांति से हुई, जैसे 'दक्षिण का

राजा' के रूप में फ्रांस की शुरुआत भी क्रांति से हुई।

क्रांति अजगर की एक विशेषता है, जो दक्षिण के राजाओं का प्रतीक है। अजगर—जो दक्षिण के राजा का प्रधान प्रतीक है—शैतान है, और सहस्राब्दी के अंत में जब वह क्रांति करने का प्रयास करता है, स्वर्ग से आग उतरती है और उसे भस्म कर देती है। आरम्भ में स्वर्ग में किया गया उसका विद्रोह, सहस्राब्दी के समापन पर होने वाले उसके विद्रोह का अल्फा था।

1798 में, फ्रांस ने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान भविष्यसूचक रूप से दक्षिण के आध्यात्मिक राजा के रूप में सिंहासन ग्रहण किया। वह क्रांति यूरोप के राष्ट्रों में प्रचंडता से फैल गई और अंततः रूसी क्रांति तक जा पहुँची, जिसके शीघ्र ही बाद उसी वर्ष बोल्शेविक क्रांति हुई।

1917 की रूसी क्रांति दो मुख्य चरणों से मिलकर बनी थी: फ़रवरी क्रांति (जिसने जारवादी राजतंत्र को उखाड़ फेंका, निरंकुशता का अंत किया, और सोवियतों के साथ द्वैध सत्ता के काल के दौरान एक अंतरिम सरकार की स्थापना की) और अक्टूबर क्रांति (जिसे बोल्शेविक क्रांति भी कहा जाता है, जिसमें लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने तख्तापलट के माध्यम से सत्ता पर कब्ज़ा किया, जिसके परिणामस्वरूप सोवियत शासन की स्थापना हुई और समाजवाद/साम्यवाद की ओर पथ प्रशस्त हुआ)।

ऐतिहासिक विश्लेषणों और क्रांतिकारी सिद्धांत में (विशेषतः ट्रॉट्स्की, रोज़ा लक्ज़मबर्ग तथा समानताएँ स्थापित करने वाले अन्य चिन्तकों के मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्यों में), फ्रांसीसी क्रांति (1789-1799) को प्रायः रूसी घटनाक्रम के विकास-क्रम के लिए प्रतिमान अथवा रूपरेखा प्रदान करनेवाली के रूप में देखा जाता है। फ्रांसीसी क्रांति के वे दो चरण, जिन्होंने इन रूसी चरणों का प्रतिरूप प्रस्तुत किया, ये हैं:

- प्रारम्भिक मध्यमार्गी/संवैधानिक चरण (लगभग 1789-1792), जो फ़रवरी क्रान्ति के अनुरूप है। यह फ्रांसीसी चरण बास्तील पर धावे, एस्टेट्स-जनरल/राष्ट्रीय सभा के आह्वान, सामंती विशेषाधिकारों के उन्मूलन, मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की उद्घोषणा, तथा गिरॉन्डिनों और मध्यमार्गी सुधारकों के अधीन एक संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना के साथ आरम्भ हुआ। इसने निरंकुश राजतंत्र को उखाड़ फेंका, परन्तु बुर्जुआ/उदारवादी शासन-व्यवस्था के तत्त्वों और द्वैध/विवादित सत्ता-संरचनाओं (उदाहरणार्थ, सभा और शेष बनी हुई राजशाही के बीच) को बनाए रखा। इसी प्रकार, फ़रवरी 1917 ने त्सारशाही का अंत तो किया, परन्तु एक बुर्जुआ अस्थायी सरकार और सोवियतों के साथ द्वैध सत्ता-व्यवस्था को जन्म दिया।
- कट्टरपंथी/याकॉबिन चरण (लगभग 1792-1794; जिसमें प्रथम गणराज्य की स्थापना, लुई सोलहवें का मृत्युदण्ड, तथा रोबेस्पिएर और याकॉबिनो/लोक-सुरक्षा समिति के अधीन आतंक-शासन सम्मिलित हैं) का साम्य अक्टूबर (बोल्शेविक) क्रांति से है। याकॉबिनो ने अधिक मध्यमवादी गिरॉन्दिनों से कट्टर कार्यवाहियों के माध्यम से सत्ता पर अधिकार कर लिया, गणराज्य की घोषणा की, प्रतिविप्लव का दमन किया, और क्रांति को गहनतर सामाजिक रूपांतरण तथा आंतरिक/बाह्य खतरों के विरुद्ध रक्षा की दिशा में अग्रसर किया। यह उसी प्रकार है, जैसे बोल्शेविकों ने अस्थायी सरकार को अपदस्थ किया, सर्वहारी (सर्वहारा की तानाशाही) शासन को सुदृढ़ किया, और क्रांतिकारी समाजवाद को आगे बढ़ाया।

ये समानताएँ इस तथ्य पर बल देती हैं कि क्रांतियाँ प्रायः एक प्रतिरूप का अनुसरण करती हैं: पुराने शासन के विरुद्ध प्रारम्भिक व्यापक विद्रोह (मध्यमार्गी/बुर्जुआ शक्तियों के नेतृत्व में), जिसके बाद संकट की स्थिति में क्रांति को 'बचाने' तथा उसे और गहन करने के लिए उग्रपंथियों द्वारा सत्ता का और अधिक उग्र अधिग्रहण होता है। स्वयं बोल्शेविकों ने फ्रांसीसी उदाहरण से सचेत रूप में प्रेरणा ली, और अपने अक्टूबर विद्रोह को जैकोबिन तख्तापलट के समकक्ष माना—जो प्रतिक्रांति को रोकने और क्रांति की संभावनाओं को पूर्ण करने के लिए आवश्यक था।

यह प्रकारिकी ट्रॉट्स्की की "हिस्ट्री ऑफ द रशियन रेवोल्यूशन" जैसे ग्रंथों में (जो रूस में द्वैध सत्ता के चरण की फ्रांस में समान गतिकी से स्पष्ट रूप से तुलना करता है) और रोसा ल्यूक्सेमबर्ग के रूसी घटनाक्रम पर लेखन में प्रकट होती है, जहाँ वह उल्लेख करती हैं कि रूसी क्रांति का प्रथम काल (मार्च-अक्टूबर) फ्रांसीसी (और अंग्रेज़ी) क्रांतियों की

रूपरेखा का अनुसरण करता है, तथा बोल्शेविक सत्ता-ग्रहण जैकोबिन उत्थान के समानांतर है।

यीशु सदैव आरम्भ द्वारा अन्त का निरूपण करते हैं, और दक्षिण के प्रथम आध्यात्मिक राजा के रूप में नेपोलियन का पतन क्रांति के आरम्भ के मार्गचिह्नों के अनुसार हुआ, और ऐसा करते हुए उसने सोवियत संघ के पतन का प्रतिनिधित्व किया।

नेपोलियन का क्रमिक (चरण-दर-चरण) अवसान, उसी प्रकारात्मक ढाँचे में, सोवियत संघ की क्रमिक अवनति और 1991 के विघटन से निकट साम्य रखता है, जिसमें फ्रांसीसी क्रांति के दो चरणों ने रूसी क्रांति के फ़रवरी और अक्टूबर 1917 के चरणों का पूर्वरूप प्रस्तुत किया था। यह समांतरता उत्तर-उग्र समेकन चरण (बोनापार्टवाद) और उसके अपरिहार्य विघटन तक विस्तृत होती है। यह प्रतिपादन सामान्य ऐतिहासिक प्रतिरूपों तथा मार्क्सवादी विश्लेषणों (विशेषतः ट्रॉट्स्की की "The Revolution Betrayed" तथा संबद्ध कृतियों) दोनों से ग्रहण किया गया है, जो नेपोलियन को बोनापार्टवाद का आदिरूप मानते हैं: एक सुदृढ़-हस्त शासन-व्यवस्था जो किसी क्रांति के उग्र चरमोत्कर्ष के पश्चात उदित होती है, वर्गों के बीच संतुलन साधती है, क्रांति की प्रमुख संरचनात्मक उपलब्धियों को सुरक्षित रखती है (उसके लोकतांत्रिक प्रेरक बल को दबाते हुए), एक व्यक्तिगत/सैन्य-नौकरशाही साम्राज्य का निर्माण करती है, अतिविस्तार करती है, और तत्पश्चात चरणबद्ध पतन से गुजरती है, जो पुरानी व्यवस्था की आंशिक पुनर्स्थापना की ओर ले जाता है।

नेपोलियन का बोनापार्टवादी उत्थान स्टालिनवादी सुदृढ़ीकरण के समानांतर है

याकॉबिनो के उग्र चरण और थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया (1794) तथा अस्थिर डायरेक्टरी (1795-1799) के बाद, नेपोलियन का 18 ब्रुमेयर तख्तापलट (1799) कौंसुलेट की स्थापना करता है, तत्पश्चात (1804) साम्राज्य की। वह बुर्जुआ क्रांतिकारी उपलब्धियों का संहिताकरण करता है और उनका निर्यात करता है (नेपोलियन संहिता, सामंती विशेषाधिकारों का अंत, सशक्त केंद्रीकृत राज्य), किन्तु उन्हें अधिनायकवादी शासन, सैन्य गौरव और एक नए अभिजात्य वर्ग के अधीन कर देता है।

बोल्शेविक/अक्टूबर के उग्र चरण और प्रारंभिक सोवियत प्रयोगों के बाद, नौकरशाही अपकर्ष आरंभ हो जाता है (विशेषतः 1920 के दशक के मध्य से)। स्टालिन का सुदृढ़ीकरण वाम विपक्ष को परास्त करता है, 'एक देश में समाजवाद' को लागू करता है, और एक पुलिस/सैन्य-नौकरशाही तानाशाही स्थापित करता है। योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीयकृत संपत्ति (अक्टूबर की मूल उपलब्धियाँ) संरक्षित तो रहती हैं, पर उन्हें एक विशेषाधिकारप्राप्त जाति के साधन में बदल दिया जाता है, और अंतरराष्ट्रीयतावाद का परित्याग कर दिया जाता है।

दोनों ही स्थितियों में क्रांतिकारी ऊर्जा 'जम' दी जाती है और उसे किसी एक व्यक्ति अथवा तंत्र के अधीन राज्यसत्ता और विस्तार की ओर मोड़ दिया जाता है (ट्रॉट्स्की ने स्पष्ट रूप से स्टालिन शासन को 'सोवियत बोनापार्टवाद' का एक रूप कहा, जो कौंसुलेट की अपेक्षा नेपोलियन के साम्राज्य के अधिक निकट था)।

चरणबद्ध पतन

यह मूल संरेखण है—पतन कोई एक आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि अतिविस्तार, आंतरिक विरोधाभास, सैन्य दलदलों में फँसाव, परिधीय नियंत्रण के हास, विफल सुधारों, और अंततः विघटन/पुनर्स्थापन द्वारा प्रेरित क्षरणों की एक क्रमिक शृंखला है।

नेपोलियनिक पक्ष (1812 से 1815)

- 1812: रूस पर विनाशकारी आक्रमण—Grande Armée (6,00,000 सैनिक) को रसद-संबंधी विफलताओं, कठोर शीतकाल और प्रतिरोध के कारण भारी हताहतियाँ हुईं। यह एक विनाशकारी मोड़ सिद्ध हुआ; प्रतिष्ठा और मानवबल का अपार हास।

- 1813: उसके विरुद्ध एक गठबंधन गठित होता है; लाइपज़िग में पराजय ("राष्ट्रों का युद्ध")- जर्मन सहयोगियों और प्रदेशों की हानि; साम्राज्य का संकुचन आरंभ होता है।
- 1814: मित्र-राष्ट्र फ्रांस के मुख्य भूभाग पर आक्रमण करते हैं; पेरिस पर कब्ज़ा हो जाता है; नेपोलियन पदत्याग करता है और एल्बा में निर्वासित किया जाता है।
- 1815: संक्षिप्त पुनरागमन (सौ दिन), वाटरलू में अंतिम पराजय; सेंट हेलेना में स्थायी निर्वासन; बोर्बो राजतंत्र की पुनर्स्थापना (क्रांतिकारी उपलब्धियों का प्रतिक्रियावादी प्रतिगमन, यद्यपि पूर्ण नहीं—कुछ वैधानिक/प्रशासनिक परिवर्तन कायम रहे)।

सोवियत पक्ष (1970 के दशक से 1991 तक)

- 1970 के दशक का उत्तरार्ध-1980 का दशक: आर्थिक ठहराव (ब्रेज़नेव के अधीन "zastoi"), दीर्घकालिक अभाव, प्रौद्योगिकीय पिछड़ापन, और अमेरिका/नाटो के साथ अशक्तकारी शस्त्र-प्रतिस्पर्धा—तंत्रगत अतिविस्तार अर्थव्यवस्था को भीतर से खोखला करने लगता है।
- 1979-1989: अफ़ग़ानिस्तान युद्ध—सोवियत 'वियतनाम'; यह दलदल संसाधनों, मनोबल और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा का हास करता रहा (विडंबनापूर्ण समानता पर ध्यान दें: नेपोलियन रूस में विनष्ट हुआ; सोवियत संघ एक दुर्गम, प्रतिरोधी युद्ध-क्षेत्र में लहलुहान हुआ)
- 1985-1989: गोर्बाचेव की पेरेस्त्रोइका/ग्लासोस्त सुधार-नीतियाँ (प्रणाली को "बचाने" का प्रयत्न, नेपोलियन-काल के उत्तरार्ध के कुछ समायोजनों के समान) इसके विपरीत विरोधाभासों को उजागर करती और उन्हें तीव्र कर देती हैं; पूर्वी गुट के उपग्रह राज्य विद्रोह करते हैं और मुक्त हो जाते हैं (बर्लिन की दीवार 9 नवम्बर 1989 को गिरती है, 1989-1990 में शासन-व्यवस्थाएँ धराशायी हो जाती हैं)—"बाह्य साम्राज्य" की हानि, ठीक उसी प्रकार जैसे नेपोलियन ने अपने मित्र-राज्यों को खो दिया था।
- 1990-1991: आंतरिक राष्ट्रवादी संकटों का दौर; गणराज्यों ने संप्रभुता की घोषणा की; अगस्त 1991 का कठोरपंथियों का तख्तापलट नाटकीय रूप से विफल हो गया; 25 दिसंबर 1991 को गोर्बाचेव ने इस्तीफा दे दिया; सोवियत संघ 15 राज्यों में विघटित हो गया। इसके पश्चात् पूंजीवादी पुनर्स्थापन हुआ (येल्लिसन-युग की शॉक थेरेपी, ओलिगार्क, निजीकरण)—बोर्बो पुनर्स्थापन के अनुरूप: पूर्व-क्रांतिकारी वर्गीय तत्त्व (या उनके समकक्ष) लौट आए, कुछ प्रशासनिक रूपों को बनाए रखते हुए, क्रांतिकारी संपत्ति-संबंधों की संपूर्णता का प्रतिगमन कर दिया।

दोनों ही प्रसंगों में, 'साम्राज्य' (फ्रांसीसी कॉन्टिनेंटल सिस्टम बनाम सोवियत पूर्वी गुट/COMECON का प्रभाव) बाहरी परिधि से भीतर की ओर बिखरता है, आंतरिक क्षय तेज़ी से बढ़ता है, एक अंतिम संकट उसकी खोखलाहट को उजागर कर देता है, और पुरानी सामाजिक शक्तियाँ (राजतंत्र/पूँजीवाद) पुनः प्रतिष्ठित होती हैं। बोनापार्टवाद टिकाऊ नहीं सिद्ध होता—'अपनी नोंक पर संतुलित पिरामिड,' जैसा कि ट्रॉट्स्की ने कहा—क्योंकि वह शत्रुतापूर्ण बाह्य दबावों के बीच क्रांति के आर्थिक आधार का—यद्यपि विकृत रूप में—संरक्षण करते हुए, उसकी लोकतांत्रिक नींव के दमन पर टिका होता है। दीर्घ दृष्टि में सोवियत पतन 'अचानक' नहीं था, बल्कि क्रमिक आंतरिक सड़न की पराकाष्ठा था; ठीक वैसे ही जैसे नेपोलियन का साम्राज्य रातोंरात लुप्त नहीं हुआ, बल्कि पुनर्स्थापना तक क्रमिक पराजयों के माध्यम से क्षीण होता गया।

फ्रांस और सोवियत संघ का आरम्भ और अन्त, राजा उज्जिय्याह और टॉलेमी के साक्ष्य के साथ मेल खाते हैं। टॉलेमी चतुर्थ फिलोपाटर ने राफिया के युद्ध (217 ई.पू.) में उत्तर के राजा (अन्तियोकस तृतीय) पर निर्णायक विजय प्राप्त की, परन्तु "उससे वह दृढ़ न होगा"—वह अपनी बढ़त का अनुसरण करने के बजाय शान्ति कर लेता है, फिर विलास और आत्म-महिमामंडन की ओर लौट जाता है, और तब (3 मक्काबियों 1-2 में संरक्षित अभिलेख के अनुसार) अपनी विजय के उपरान्त टॉलेमी यरूशलेम का आगमन करता है। उसका हृदय घमण्ड से भर जाता है; वह पवित्रों के पवित्रस्थान में प्रवेश करने और स्वयं बलिदान चढ़ाने का प्रयत्न करता है—यह सच्चे परमेश्वर के विरुद्ध

अधिकार-हरण और धृष्ट अवज्ञा का कृत्य था। उस पर दैवी प्रहार होता है (लकवा पड़ता है), वह अपमानित होता है, और वह परमेश्वर की प्रजा का उत्पीड़न करने की ओर मुड़ता है। इसके पश्चात उसका राज्य क्रमिक पतन का हो जाता है: नैतिक भ्रष्टता, आन्तरिक विद्रोह, और मृत्यु तक शक्ति का क्षय। यह राजा उज्जिय्याह (2 इतिहास 26:16-21) का सटीक प्रतिबिम्ब है, जिसका हृदय सैनिक सफलता के बाद ऊँचा हो गया; तब वह धूप जलाने के लिए मन्दिर में प्रवेश कर गया (याजकों का अधिकार हड़पते हुए), और उसके माथे पर कोढ़ लग गया—जो एक सार्वजनिक और दृष्टिगोचर न्याय था। उसके बाद उज्जिय्याह मृत्यु तक एकान्तवास में रहा, यहोवा के भवन से कटा हुआ—अकस्मात् विनाश के बजाय धीमी, लम्बी क्षीणता के द्वारा उसका अन्त हुआ।

दोनों ही दक्षिण के राजा हैं, जिनका अभिमान यरूशलेम के मंदिर में अतिक्रमण के रूप में प्रकट होता है; और तत्पश्चात तत्काल पतन के स्थान पर एक क्रमिक, क्षरणकारी समापन आता है। यह प्रत्येक पश्चातवर्ती "दक्षिण का राजा" के लिए प्रकारात्मक प्रतिरूप है।

1798: फ्रांस दक्षिण का आध्यात्मिक राजा बनता है

'अन्त का समय' (1798) में, नास्तिक फ्रांस (वह शक्ति जिसने अभी-अभी मिस्र के आध्यात्मिक लक्षण—परमेश्वर का खुलेआम इंकार, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 11:8 में है—प्रकट किए थे) पोप को बंदी बनाकर उत्तर के राजा (पापसी) से टक्कर लेता है। नेपोलियन उस टक्कर का सैन्य मूर्त रूप है। 1798 में फ्रांस दक्षिण का मुकुट धारण करता है, क्योंकि वह उसी नास्तिक आत्मा को प्रतिष्ठित करता है जिसे प्राचीन मिस्र ने अभिव्यक्त किया था।

परन्तु जैसे टॉलेमी 'अपनी विजय का अधिकतम लाभ' नहीं उठा सका, वैसे ही फ्रांसीसी क्रांति का कट्टरपंथी चरण न तो अपनी उपलब्धियों को स्थायी रूप से बनाए रख सका और न ही उनका पूर्णतः निर्यात कर सका। नास्तिकता का दर्शन परिपक्व होता है और एक नया राजकीय स्वर पाता है; इसी के साथ दक्षिण का मुकुट आगे हस्तांतरित होता है।

प्रगतिशील नेतृत्व के प्रतीक: नेपोलियन से लेनिन होते हुए स्टालिन तक

ये तीनों यादृच्छिक नहीं हैं; ये प्रगतिशील समापन हैं—प्रत्येक दक्षिण के राजा के अपने ही धीमे विघटन की ओर अग्रसर गतिपथ के एक और चरण का प्रतिनिधित्व करता है। नेपोलियन—1798 के बाद का प्रथम महान प्रतीक। मिस्र (शाब्दिक दक्षिण) में विजयी होकर वह अति-विस्तार करता है; 1812 का रूसी अभियान एक विपत्ति सिद्ध हुआ, जिसने 1813-1814 में उसके साम्राज्य के परिधीय भागों में पराजयों की शृंखला का आरम्भ किया; वह अंतिम पराजय (वाटरलू, 1815) सहता है, और दो बार निर्वासित किया जाता है। नेपोलियन एक क्रमिक, चरणबद्ध अवसान का प्रतिनिधित्व करता है—ठीक प्टोलमी और उज्जिय्याह के समान।

लेनिन ने 1917 की अक्टूबर क्रांति में मुकुट छीन लिया। बोलशेविकों का 'धक्का' पुरानी व्यवस्था (धार्मिक सत्ता सहित) के विरुद्ध युद्ध को जारी रखता है। परन्तु क्रांति का उग्र चरण स्थिर नहीं हो पाता; स्वयं लेनिन का स्वास्थ्य शीघ्र ही बिगड़ जाता है, और प्रणाली का नौकरशाहीकरण आरंभ हो जाता है।

स्टालिन, समेकक (सोवियत बोनापार्टवाद), क्रांति को एक सैन्य-नौकरशाही साम्राज्य में "जमा" देता है, मूल उपलब्धियों को संरक्षित करता है (राष्ट्रीयकृत अर्थव्यवस्था—नेपोलियन की संहिता का सामंत-विरोधी समतुल्य), परन्तु शक्ति को भीतर की ओर (शुद्धिकरण) और बाहर की ओर (विस्तार) मोड़ देता है। तथापि हृदय नास्तिकता में उद्दत है; तंत्र अपनी विजय का सचमुच "सर्वोत्तम उपयोग" नहीं कर सकता। अतिविस्तार (अफ़ग़ानिस्तान—नेपोलियन के रूस-आक्रमण का समानांतर), ठहराव, विफल सुधार (पेरेस्त्रोइका अंतिम हताश प्रयास था), उपग्रह-राज्यों का खोना (1989-90 = "मित्रों" का खोना), और अंततः अंतिम विघटन (1991)।

सोवियत संघ का पतन आकस्मिक नहीं था—वह क्रमिक था, ठीक वैसे ही जैसे नेपोलियन का साम्राज्य कदम-दर-कदम क्षरण होता गया और जैसे प्टोलमी तथा उज्जिय्याह के राज्यकाल अपने मंदिर-घमण्ड के क्षण के बाद क्षीण पड़ गए। दक्षिण का "आध्यात्मिक" राजा (शासन-व्यवस्था के रूप में नास्तिकता) ने अपना स्वयं का

दीर्घकालिक न्याय भोगा: भीतर से खोखला हो गया, असत्य को बनाए रखने में असमर्थ रहा, और उत्तर के राजा के प्रतिआंदोलन में बहा दिया गया (शक्ति-निर्वात में पापसी का पुनरुत्थान)।

फ्रांसीसी क्रांति (दो चरणों में) रूसी क्रांति (फरवरी और अक्टूबर/बोल्शेविक) का प्रतिरूप है। नेपोलियन-कालीन बोनापार्टवाद और उसका क्रमिक पतन, स्टालिनवादी समेकन तथा सोवियत संघ के क्रमिक पतन का प्रतिरूप ठहरते हैं। यह सब दानिय्येल 11 में "दक्षिण के राजा" की धारा की आधुनिक अभिव्यक्ति है, प्टोलेमी की राफिया में विफलता और मंदिर-संबंधी दर्प से, उज्जिय्याह के उसी पाप और धीमे अंत के माध्यम से, 1798 में फ्रांस तक, और उसके नास्तिक उत्तराधिकारी (लेनिन-स्टालिन युग) तक, जो अपनी विजयों से स्वयं को सुदृढ़ नहीं कर सका।

लेनिन, कट्टरपंथी संस्थापक या सत्ता पर अधिकार करने वाला (याकूबिन/बोल्शेविक उदय के समानान्तर; 1917 के बाद का 'धक्का' चरण ब्रुमेयर के पश्चात नेपोलियन की प्रारम्भिक कौंसलशाही के सदृश)। स्टालिन बोनापार्टवादी सुदृढ़कर्ता था (सोवियत साम्राज्य का निर्माता, शुद्धिकरण, द्वितीय विश्वयुद्ध में विजय, शीतयुद्ध का शिखर; नास्तिकता में हृदय ऊँचा उठा, परन्तु दीर्घकाल में उस विजय को पूर्णतः "मजबूत" करने में असमर्थ—अतिविस्तार का आरम्भ)।

खुशेव 'पिघलाव' के चरम-उत्तर काल के नेता थे (1953-1964): उन्होंने स्टालिन की निंदा की (1956 का 'गोपनीय भाषण'), कुछ भ्रष्टाचार का अनावरण किया, सीमित सुधारों का प्रयास किया, परंतु प्रणालीगत विरोधाभासों को सुलझाने में विफल रहे। यह 'थर्मिडोरियन' अथवा प्रारम्भिक अवनति के चरण से मेल खाता है—जहाँ आतंक का शिथिलीकरण होता है, जबकि केन्द्रीय नास्तिक संरचना यथावत बनी रहती है, तथापि प्रतिष्ठा का हास होता जाता है (उदाहरणार्थ, 1962 के क्यूबा मिसाइल संकट में झेला गया अपमान आगामी बड़ी पराजयों से पूर्व आई नेपोलियन-युगीन छोटी असफलताओं का प्रतिबिंब है)।

गोर्बाचेव (1985-1991) एक विवश सुधारक थे, जिन्होंने पेरिस्ट्रोइका (पुनर्गठन) और ग्लासोस्त (खुलापन) को व्यवस्था को 'बचाने' के अंतिम उपायों के रूप में अपनाया; परंतु उन्होंने पतन को और तीव्र कर दिया—पूर्वी गुट का विघटन (1989 में बर्लिन दीवार का पतन) और आंतरिक विद्रोह। यह 'प्रगतिशील अंत' का सबसे स्पष्ट संकेतक है: 1814 के आक्रमण से पूर्व नेपोलियन के देर से किए गए समायोजन-प्रयासों के सदृश, या मंदिर-अहंकार के उपरांत प्टोलेमी/उज्जिय्याह का लंबा खिंचता पतन। 1989 में पोप जॉन पॉल द्वितीय (उत्तरी राजा) के साथ गोर्बाचेव का कॉन्कॉर्डेट/भेंट आत्मिक पराजय का प्रतीक है—दक्षिणी राजा की नास्तिकता पापल पुनरुत्थान के सम्मुख झुकती है।

येल्त्सिन (1991 से आगे) अंतिम विघटन का प्रतिनिधि व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अगस्त 1991 के तख्तापलट के विरुद्ध प्रतिरोध का नेतृत्व किया, रूस के राष्ट्रपति बने, यूएसएसआर के विघटन (दिसंबर 1991) की देखरेख की, और 'शॉक थेरेपी' के माध्यम से निजीकरण तथा पूँजीवादी व्यवस्था की पुनर्स्थापना को अंजाम दिया। वह अराजक समापन और पूर्व-क्रांतिकारी तत्वों की आंशिक 'पुनर्स्थापना' का मूर्त रूप है (ओलिगार्खिक पूँजीवाद; जैसे नेपोलियन के पश्चात बॉर्बन वंश की वापसी)। दक्षिणी राजा का महल समूल बहा दिया जाता है, जो दानिय्येल 11:40 में उत्तरी राजा द्वारा बवंडर-जैसी विजय की पूर्ति है (पापसी, संयुक्त राज्य के साथ गठबंधन के माध्यम से)।

टाइपोलॉजी तत्काल पतन के स्थान पर ठहर-ठहरकर, क्रमशः होने वाले न्याय पर बल देती है, जैसे टॉलेमी चतुर्थ की राफिया-विजय के बाद उत्पन्न अहंकार, मंदिर में अनधिकृत प्रवेश, दैवी प्रहार और धीमा क्षय; उज्जिय्याह का कोढ़ के कारण मृत्यु पर्यन्त एकांतवास; नेपोलियन की चरणबद्ध पराजयें (रूस, लाइपज़िग, पेरिस, एल्बा, वाटरलू)। सोवियत रेखा स्टालिन के अधीन शिखर-शक्ति, तथा खुशेव की "पिघलन" के दौरान क्रमशः भीतर से खोखला होते जाना—जो व्यवस्था की दरारों को उजागर करता है—को निरूपित करती है। तत्पश्चात ब्रेज़नेव-युग का ठहराव और फिर गोर्बाचेव के सुधार त्वरक बन जाते हैं; येल्त्सिन का काल उस प्रवाह को निर्णायक समापन तक ले आता है (USSR भंग, नास्तिकता का शासकीय रूप समाप्त)। "हृदय का ऊँचा हो जाना" समूची रेखा भर में प्रकट है (नास्तिक अवज्ञा), परन्तु कोई भी "विजय का पूरा लाभ" नहीं उठाता।

दक्षिणी राजाओं का अन्त क्रमशः घटित होता है, शैतान के विनाश का प्रारम्भ क्रूस पर हुआ, और अन्ततः उसे 1,000 वर्षों के लिए निर्वासन में भेजा जाता है, तत्पश्चात् उसकी मृत्यु होती है।

और मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा, जिसके हाथ में अथाह कुण्ड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। और उसने उस अजगर, उस प्राचीन सर्प को—जो शैतान, अर्थात् सैतान, है—पकड़ लिया, और उसे हजार वर्षों के लिए बाँध दिया; और उसे अथाह कुण्ड में डाल दिया, और उसे बंद कर दिया, और उस पर मुहर लगा दी, ताकि वह फिर राष्ट्रों को धोखा न दे, जब तक कि वे हजार वर्ष पूरे न हो जाएँ; और उसके बाद उसे थोड़े समय के लिए अवश्य छोड़ दिया जाएगा।

और मैंने सिंहासन देखे, और जो उन पर बैठे थे, उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया; और मैंने उन लोगों की आत्माएँ देखीं, जिनका शिरच्छेद यीशु की गवाही और परमेश्वर के वचन के कारण किया गया था, और जिन्होंने न तो पशु की और न उसकी प्रतिमा की आराधना की थी, और न ही अपने ललाट पर या अपने हाथों में उसका चिन्ह ग्रहण किया था; और वे जीवित होकर मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। परन्तु शेष मरे हुए उन एक हजार वर्षों के पूरा होने तक फिर जीवित न हुए।

यह प्रथम पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र है वह जो प्रथम पुनरुत्थान में सहभागी है; ऐसों पर द्वितीय मृत्यु का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ सहस्र वर्ष तक राज्य करेंगे।

और जब हजार वर्ष पूरे हो जाएँगे, तो शैतान अपने बंदीगृह से छोड़ा जाएगा, और वह पृथ्वी के चारों कोनों में जो जातियाँ हैं—गोग और मागोग—को धोखा देने के लिए बाहर निकलेगा, ताकि उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करे; जिनकी संख्या समुद्र की रेत के समान है। और वे पृथ्वी के विस्तार पर चढ़ आए, और पवित्र जनों की छावनी और प्रिय नगर को चारों ओर से घेर लिया; और स्वर्ग से परमेश्वर की ओर से आग उतरी और उन्हें भस्म कर दिया। और वह शैतान, जो उन्हें धोखा देता था, आग और गंधक की झील में डाल दिया गया, जहाँ पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता हैं; और वे दिन-रात युगानुयुग यातना पाएँगे। प्रकाशितवाक्य 20:1-10.

हम दानिय्येल अध्याय ग्यारह, पद 11 से 15 में उल्लिखित दक्षिण के राजा पर अपनी विवेचना को अगले लेख में जारी रखेंगे।

The Time of the End पत्रिका 1996 में प्रकाशित हुई, और यह दानिय्येल की पुस्तक की उस भविष्यवाणी को प्रस्तुत करती है, जिसकी मुहर 1989 में खोली गई थी। हाल ही में इस पत्रिका को ChatGPT ने पढ़ा, और पत्रिका में प्रतिपादित पद चालीस के इतिहास में यूक्रेन की भूमिका का आकलन करने के लिए उससे कहा गया। निम्नलिखित उस पत्रिका की रूपरेखा है, जो तीस वर्षों से सार्वजनिक अभिलेख में रही है। पत्रिका में एलेन व्हाइट की रचनाओं से उद्धृत प्रथम अंश टेस्टिमोनीज़, खंड 9, 11 है।

अवलोकन: भविष्यवाणीगत रूपरेखा में यूक्रेन

पत्रिका द्वारा प्रस्तुत दानिय्येल 11:40-45 की भविष्यवाणी-संबंधी रूपरेखा के अंतर्गत, यूक्रेन की चर्चा सोवियत संघ के पतन तथा पोपसत्ता (उत्तर का राजा) और नास्तिक साम्यवाद (दक्षिण का राजा) के बीच संघर्ष के संदर्भ में की गई है। यूक्रेन को प्रॉक्सी युद्धों के अंतिम चरणों के दौरान एक प्रमुख धार्मिक और भू-राजनीतिक रणभूमि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, विशेषकर यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया तथा सोवियत शासन के अधीन दशकों के दमन के पश्चात उसके वैधीकरण के संबंध में।

पत्रिका यूक्रेन को दानिय्येल 11:40 की वृहत्तर भविष्यवाणी-परिपूर्ति का एक अंग के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें वेटिकन-संयुक्त राज्य अमेरिका के गठबंधन के माध्यम से दक्षिण के राजा को बहा दिया जाना वर्णित है। यूक्रेन को सोवियत नास्तिकता के दुर्बलन और पूर्वी यूरोप में कैथोलिक प्रभाव के पुनरुत्थान के प्रमाण के रूप में दर्शाया गया है।

उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के बीच के युद्ध में यूक्रेन

यह पत्रिका यह सिखाती है कि दक्षिण का राजा नास्तिकता है, जिसका मूर्त रूप पहले फ्रांस (1798) में और बाद में सोवियत रूस में प्रकट होता है। उत्तर का राजा पापाई सत्ता है, और दानिय्येल 11:40 एक आध्यात्मिक युद्ध का वर्णन करता है जो 1798 में आरम्भ होता है और 1989 में सोवियत संघ के पतन में परिणति पाता है। यूक्रेन इस संदर्भ में उस सोवियत गुट के एक भाग के रूप में उभरता है, जिसे दानिय्येल 11:40 की पूर्ति में बहा दिया जाता है। यह प्रकाशन सोवियत संघ के पतन को पापाई सत्ता के घातक घाव के भरने के प्रथम चरण के रूप में प्रस्तुत करता है (प्रकाशितवाक्य 13)।

यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया का दमन (उद्धृत स्रोत)

इस पत्रिका में सोवियत शासन के अधीन कैथोलिकों के उत्पीड़न का धर्मनिरपेक्ष प्रलेखन सम्मिलित है।

टाइम पत्रिका, 4 दिसंबर 1989 से:

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात, उग्र किन्तु सामान्यतः कम रक्तपातपूर्ण उत्पीड़न यूक्रेन और नवगठित सोवियत गुट में फैल गया, जिससे लाखों रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट तथा ऑर्थोडॉक्स प्रभावित हुए।

यूक्रेन को एक ऐसे प्रमुख क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया जाता है, जहाँ साम्यवादी शासन के अधीन कैथोलिक धर्म का दमन किया गया था।

यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया का वैधीकरण

यूक्रेन पर चल रही चर्चा का एक प्रमुख केंद्रबिंदु दीर्घकाल से प्रतिबंधित यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया का वैधीकरण है।

लाइफ़ मैगज़ीन, दिसंबर 1989 से:

हाल ही में चेकोस्लोवाकिया में तीन नए कैथोलिक धर्माध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। और इस माह इटली की यात्रा के दौरान गोर्बाच्योव पोप जॉन पॉल द्वितीय से भेंट करेंगे—यह क्रेमलिन और वेटिकन के नेताओं के बीच पहली प्रत्यक्ष मुलाकात होगी। ये बैठकें सोवियत संघ में दीर्घकाल से प्रतिबंधित यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया के वैधीकरण का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं।

यू.एस. न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट, 11 दिसंबर, 1989 से:

धार्मिक स्वतंत्रता के पुनरुत्थान से यह अपेक्षा की जाती है कि उसमें पचास लाख सदस्यीय यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया पर लगाए गए आधिकारिक प्रतिबंध को हटाया जाना भी शामिल होगा, जो 1946 से भूमिगत रूप में बनी हुई है, जब स्टालिन ने उसे रूसी रूढ़िवादी कलीसिया में समाहित करने का आदेश दिया था। यूक्रेनी कलीसिया के वैधीकरण की प्राप्ति पोप के प्रमुख उद्देश्यों में से एक रही है।

पत्रिका इसे नास्तिकतावादी नियंत्रण के दुर्बलन और कैथोलिक शक्ति की पुनर्स्थापना के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है। इसे वेटिकन के कूटनीतिक दबाव का प्रत्यक्ष परिणाम तथा दानिय्येल 11:40 की पूर्ति में एक मील का पत्थर ठहराया गया है, और पूर्व साम्यवादी भूभाग में पापत्व के प्रभाव की पुनर्प्राप्ति के दृष्टिगोचर उदाहरण के रूप में यूक्रेन को प्रस्तुत किया गया है।

पापत्व की अग्रगति के प्रमाण के रूप में यूक्रेन

साम्यवाद का पतन केवल एक राजनीतिक परिवर्तन नहीं, बल्कि नास्तिकता की आध्यात्मिक पराजय, पापाई सत्ता का भूराजनीतिक अग्रगमन, और वैश्विक प्रभुत्व में पापाई सत्ता की वापसी का आरंभ माना जाता है। यूक्रेन, सोवियत धार्मिक दमन के विघटन का एक प्रकरण-अध्ययन और पूर्वी यूरोप में रोम की एक सामरिक विजय बन जाता है। यह

थोपी हुई नास्तिकता से पुनर्स्थापित कैथोलिक प्राधिकार की ओर प्रत्यक्ष परिवर्तन का द्योतक है, और यूक्रेनी कैथोलिक चर्च के वैधीकरण को इस बात के भविष्यवाणी-संबंधी पुष्टिकरण के रूप में माना जाता है कि उत्तरी राजा, दक्षिणी राजा को "बवंडर के समान" उखाड़ फेंक रहा था।

यूक्रेन और भविष्यवाणी का व्यापक अनुक्रम

1. 1798 - पापसी को प्राणघातक घाव लगता है।
2. 1917 - अनीश्वरवाद रूस में स्थानांतरित होता है (बोल्शेविक क्रांति)।
3. 1989 - सोवियत संघ का पतन होता है।
4. यूक्रेन - कैथोलिक कलीसिया को कानूनी मान्यता प्राप्त हुई।
5. पोप का पद भू-राजनीतिक प्रभाव पुनः प्राप्त करता है।
6. अंततः संयुक्त राज्य अमेरिका पापाई प्रभाव के अधीन आ जाता है (दानिय्येल 11:41)।
7. सम्पूर्ण जगत् अनुसरण करता है (दानिय्येल 11:42-43)।

सोवियत नास्तिकता और पुनर्स्थापित पापाई प्रभाव के बीच होने वाले संक्रमण के एक भाग के रूप में, यूक्रेन चरण 3-4 के अंतर्गत आता है।

यूक्रेन-विषयक विमर्श में संदर्भित स्रोत

- जेफ़ पिप्पेंजर (मुख्य धर्मशास्त्रीय रूपरेखा)

भविष्यवाणी की आत्मा

- महान विवाद
- चयनित संदेश
- कलीसिया के लिए साक्ष्य

लौकिक प्रेस

- टाइम पत्रिका
- लाइफ़ मैगज़ीन
- यू.एस. न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट

यूक्रेन का उल्लेख निम्नलिखित के संबंध में किया गया है:

- द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर कैथोलिकों का उत्पीड़न
- यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया का भूमिगत अस्तित्व
- गोर्बाचेव-वेटिकन कूटनीति
- कैथोलिक पदानुक्रम की विधिक पुनर्स्थापना

न्यूज़लेटर में यूक्रेन की भूमिका का सारांश

सोवियत नास्तिकता के अधीन यूक्रेन दमनित कैथोलिक धर्म का एक गढ़ था। यूक्रेनी कैथोलिक कलीसिया के वैधीकरण ने 'दक्षिण के राजा' के दुर्बल होने का संकेत दिया। यूक्रेन में वेटिकन के प्रभाव ने पोपसत्ता के पुनरुज्जीवन को प्रदर्शित किया, और यूक्रेन के धार्मिक परिवर्तन ने यह ठोस प्रमाण प्रस्तुत किया कि दानिय्येल 11:40 की पूर्ति हो रही थी। यूक्रेन से संबद्ध घटनाएँ पोपसत्ता के घातक घाव के भरने के प्रथम चरण का एक अंग बनीं। अतः यूक्रेन को

एक पृथक राजनीतिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि दानिय्येल 11 के अंतिम घटनाक्रम के भीतर एक भविष्यसूचक चिन्ह के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।